

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 12, पाठ केंद्रित

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

हम धर्मग्रंथ की व्याख्या करने के ऐतिहासिक दृष्टिकोण के एक पहलू के रूप में लेखक के इरादे पर चर्चा कर रहे हैं, जो लेखक के इच्छित अर्थ को व्याख्या के प्राथमिक लक्ष्य के रूप में देख रहा है। कुछ ऐतिहासिक व्यक्ति, विशेष रूप से जिन्हें आपको लेखक के इरादे से संबंधित जानने की आवश्यकता है, हमने व्याख्या के प्राथमिक लक्ष्य के रूप में लेखक के इरादे की खोज में महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक के रूप में फ्रेडरिक श्लेइरमाकर के बारे में थोड़ी बात की। बाइबिल के अध्ययन से पूरी तरह से बाहर, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि जिस व्यक्ति ने बाइबिल के विद्वानों द्वारा लेखक के इरादे की अपनी समझ को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उसका नाम ईडी हिर्श है।

ईडी हिर्श ने वैलिडिटी इन इंटरप्रिटेशन नामक प्रारंभिक पुस्तक में सुझाव दिया कि किसी को अर्थ और महत्व के बीच अंतर करने की आवश्यकता है। हिर्श ने कहा कि अर्थ वह है जिसे लेखक संप्रेषित करना चाहता है जैसा कि पाठ में ही अंकित है। यह वह अर्थ है जो लेखक द्वारा वहां रखा गया था, वह अर्थ जो लेखक भाषा प्रतीकों द्वारा संप्रेषित करना चाहता था, पाठ की संरचना जिससे पता चलता है कि लेखक क्या संप्रेषित करना चाहता था।

अतः पाठ का मूल अर्थ लेखक की मंशा से बंधा हुआ था। जैसा कि हिर्श ने कहा, पाठ का महत्व और यह उस अर्थ का वस्तुतः किसी भी अन्य चीज़ से संबंध था, जिसे अधिकांश बाइबिल धर्मशास्त्री और विद्वान अनुप्रयोगों के रूप में लेबल करेंगे। वे कहेंगे कि अर्थ वह है जो लेखक मूल रूप से संप्रेषित करना चाहता था, महत्व उस अर्थ का आधुनिक संदर्भ में अनुप्रयोग होगा।

इसलिए हिर्श ने लेखक के इरादे के महत्व को स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विशेष रूप से जैसा कि पाठ में प्रकट हुआ और पाठ के माध्यम से संप्रेषित किया गया, लेखक का इच्छित अर्थ जिसे लेखक पाठ में संप्रेषित करना चाहता है, उस अर्थ के संबंध से अलग है। कुछ और और अन्य स्थितियाँ, जिन्हें हिर्श ने महत्व बताया। और आप अक्सर देखेंगे कि अर्थ और

महत्व के बीच अंतर फिर से उठाया जाता है, विशेष रूप से बाइबिल के व्याख्याकारों द्वारा, किसी पाठ के अर्थ और आधुनिक पाठक के लिए इसकी चल रही प्रासंगिकता और अनुप्रयोग के बीच अंतर करने के लिए। लेकिन हमने कहा कि यद्यपि ऐसे कई कारण हैं जिनका उपयोग व्याख्या में लेखक के इरादे को एक योग्य और आवश्यक लक्ष्य के रूप में तर्क देने के लिए किया गया है, दूसरी ओर, कुछ लोगों ने कई कारणों से लेखक के इरादे को वैध या यहां तक कि एक के रूप में खारिज कर दिया है। व्याख्या का आवश्यक या संभावित लक्ष्य।

इससे पहले कि हम उस पर गौर करें, यह समझना महत्वपूर्ण है कि जो लोग लेखक के इरादे को पकड़ते हैं, वे जरूरी नहीं सोचते कि यह आसान या स्वचालित या सीधा है या कोई लेखक के इरादे को संपूर्ण या पूरी तरह से पकड़ सकता है, हालांकि वे अभी भी सोचते हैं कि यह संभव और आवश्यक है। . लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो व्याख्या के संभावित या आवश्यक लक्ष्य के रूप में लेखक के इरादे को अस्वीकार करते हैं। तो कुछ लोगों ने व्याख्या के लक्ष्य के रूप में लेखक के इरादे को क्यों खारिज कर दिया है? कुछ लोग क्यों आश्चर्य हैं कि यह व्याख्या का वैध या संभावित उद्देश्य नहीं है? और फिर, मेरी सूची संपूर्ण होने के लिए नहीं है, बल्कि केवल कुछ संभावित आपत्तियों को पकड़ने के लिए है।

सबसे पहले, कुछ लोगों ने लेखक के इरादे को खारिज कर दिया है क्योंकि किसी लेखक के दिमाग में जाना और यह निर्धारित करना असंभव है कि वह लेखक क्या कहना चाहता है। विशेष रूप से ऐसे लेखकों के साथ जो अब जीवित नहीं हैं, यह निर्धारित करने के लिए उनसे परामर्श करना असंभव है कि उनका वास्तव में क्या मतलब था। लेखक के इरादे पर कुछ प्रारंभिक प्रतिक्रियाओं ने इसे तैयार किया जिसे जानबूझकर भ्रम कहा जाता है, जो लेखक की विचार प्रक्रिया या लेखक के दिमाग, लेखक के इरादे को पुनः उत्पन्न करने या पुनर्प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है, और लेखक की सोच को अप्राप्य के रूप में देखा जाता है।

मुझे याद है कि एक बार मैं इंग्लैंड में एक प्रसिद्ध न्यू टेस्टामेंट विद्वान से बात कर रहा था, और मैं उनसे उनकी किताब के बारे में बात कर रहा था, एक किताब जो उन्होंने लिखी थी, और मैंने एक वाक्य उद्धृत किया, और मेरे उद्धृत करने के बाद उन्होंने कहा, क्या मैंने सच में ऐसा कहा? मुझे

आश्चर्य है कि इससे मेरा क्या अभिप्राय था। इसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि यदि जीवित लेखक भी कभी-कभी नहीं जानते या भूल जाते हैं कि उनका क्या मतलब है, तो ऐसे कितने अधिक लेखक हैं जो अब जीवित नहीं हैं, और विशेष रूप से आधुनिक व्याख्याकारों के समय से 2,000 साल या उससे अधिक पहले लिखा गया पाठ। तो इस प्रकार के कारणों से, कुछ लोग कहते हैं क्योंकि लेखक के दिमाग के अंदर जाना असंभव है, क्योंकि यह समझना असंभव है कि लेखक क्या सोच रहा था और इरादा कर रहा था, विशेष रूप से लेखक जो अब हमें यह बताने के लिए जीवित नहीं हैं कि लेखक की पुनर्प्राप्ति इरादा असंभव है।

फिर, इसे अक्सर जानबूझकर की गई भ्रांति के रूप में जाना जाता है। दूसरा कारण यह है कि एक लेखक पर्याप्त रूप से संवाद करने में विफल हो सकता है। अर्थात्, कुछ लेखक अक्षम हो सकते हैं।

कुछ लेखक खराब तरीके से संवाद कर सकते हैं, कुछ ऐसी बातें बता सकते हैं जो वे कहना नहीं चाहते थे। वे स्पष्ट रूप से या पर्याप्त रूप से व्यक्त नहीं कर सकते हैं कि वे क्या कहना चाह रहे हैं और वे क्या कहना चाहते हैं, और वे कभी-कभी अनजाने में भी पाठकों को गुमराह कर सकते हैं। तो इसलिए, लेखक का इरादा अप्राप्य या असंभव या अनावश्यक है।

एक और आपत्ति यह है कि कभी-कभी लेखक जितना जानते हैं उससे बेहतर संवाद कर सकते हैं। यानी, कोई लेखक कुछ कह सकता है, और आप उस लेखक के पास जाकर कह सकते हैं, क्या आपका यही मतलब था? और लेखक की प्रतिक्रिया कुछ इस तरह हो सकती है, और आपने यह सुना होगा, नहीं, मेरा ऐसा इरादा नहीं था, लेकिन यह निश्चित रूप से समझ में आता है, और मैंने जो कहा है उसे मैं एक वैध पढ़ने या व्याख्या के रूप में स्वीकार करूंगा। कई लेखकों ने किताबें लिखी हैं, विशेष रूप से मैं जिसके बारे में सोच रहा हूं, उसमें छात्रों द्वारा अपने पाठ को पढ़ने और उनके काम को पढ़ने और व्याख्याओं के साथ आने के उदाहरण दर्ज हैं कि लेखक ने वह किया जो उसका कभी इरादा नहीं था, लेकिन फिर भी उसे वैध माना जाता है। उस पाठ की समझ और अंतर्दृष्टि।

और फिर, शायद आपने अनुभव किया हो कि जहां आपने कुछ कहा है, किसी ने उसकी व्याख्या की है और कहा है, क्या आपका यह मतलब था? और आपने जवाब दिया है, नहीं, मेरा ऐसा इरादा नहीं था, लेकिन मैंने जो कहा उसकी यह एक वैध समझ है। मैं इसे इस रूप में स्वीकार करूंगा कि मैंने जो कहा वह उसकी सच्ची समझ है। इसलिए क्योंकि कभी-कभी लेखक जितना जानते हैं उससे बेहतर संवाद करते हैं, और पाठकों को कभी-कभी पाठ में ऐसी चीजें मिल जाती हैं जो लेखक का इरादा नहीं होता है, लेकिन फिर भी वे इस बात से सहमत होंगे कि पाठ में एक वैध व्याख्या और अर्थ है, फिर भी, मृत लेखकों के साथ कितना अधिक, लेखक यहां हमें यह बताने के लिए नहीं हैं कि उनका यह अर्थ अभिप्राय था या नहीं, या यदि नहीं भी था, तो भी यह अर्थ अभी भी मान्य है।

इसलिए क्योंकि लेखक अक्सर संवाद करते हैं, आज भी हम कभी-कभी जितना हम जानते हैं उससे बेहतर संवाद करते हैं, कुछ ने सुझाव दिया है इसलिए लेखक के इरादे को पुनर्प्राप्त करना असंभव है या कम से कम अनावश्यक है। एक और कारण, और फिर, इनमें से सभी संबंधित नहीं हैं, उनमें से कुछ हैं, लेकिन एक और कारण जो मुख्य रूप से अधिक साहित्यिक अध्ययन के लिए इसकी उत्पत्ति का कारण बनता है, वह यह है कि ग्रंथों को मुक्त-प्रलोटिंग के रूप में देखा जाता है, जिनका अपना जीवन होता है। एक बार जब लेखक कोई पाठ लिख देता है, तो वह अब लेखक के जीवन से कट जाता है और उसका अपना एक जीवन होता है।

अर्थात्, लेखक को अब इसका सटीक अर्थ निर्धारित करने में कोई अधिकार नहीं है। अब पाठ का अपना एक जीवन है, और पाठकों को शायद पाठ को समझने और अलग-अलग अर्थ खोजने की अनुमति है। तो फिर, क्योंकि पाठ स्वायत्त हैं, वे अपने स्वयं के जीवन के साथ स्वतंत्र रूप से तैरने वाली संस्थाएं हैं, तब लेखक का इरादा अप्राप्य है, या कम से कम खुद को लेखक के इरादे तक सीमित रखना वैध नहीं है।

कुछ लोग जो सोचते होंगे कि लेखक का इरादा अभी भी एक वैध लक्ष्य है, वे अभी भी सुझाव दे सकते हैं, लेकिन हम इसे केवल लेखक के इरादे तक सीमित नहीं कर सकते। पांचवीं आपत्ति यह हो सकती है कि व्याख्याकार अक्सर एक ही पाठ के अलग-अलग अर्थ और अलग-अलग

व्याख्याएं लेकर आते हैं। यदि लेखक का इरादा वास्तव में प्राथमिक लक्ष्य था, और वास्तव में एक वैध लक्ष्य, और पुनर्प्राप्त करने योग्य लक्ष्य था, तो ऐसा क्यों है कि व्याख्याकार पाठ की विभिन्न व्याख्याओं के साथ आते हैं? तो कोई उत्पत्ति 1 और 2 को क्यों पढ़ता है, और वे सात शाब्दिक, 24-घंटे की दिन की रचना अवधि में आश्वस्त हैं, अन्य लोग उसी पाठ को क्यों पढ़ते हैं और इसे किसी ऐसी चीज़ के संदर्भ के रूप में देखते हैं जो बहुत लंबी अवधि में घटित होती है समय? कुछ पाठक प्रकाशितवाक्य 20 और सहस्राब्दि परिच्छेद को क्यों पढ़ते हैं और आश्वस्त हैं कि यह पूर्व-सहस्राब्दिवाद की शिक्षा दे रहा है, जबकि लेखक के इरादे के बाद उसी पाठ को पढ़ने वाले अन्य पाठक सहस्राब्दिवाद के प्रति आश्वस्त हैं? या क्यों कुछ पाठक इब्रानियों अध्याय 6, इब्रानियों अध्याय 6 की सुप्रसिद्ध चेतावनी को पढ़ते हैं, और आश्वस्त होते हैं कि यह आर्मिनियाई परिप्रेक्ष्य में फिट बैठता है, और अन्य लोग उसी पाठ को पढ़ते हैं और आश्वस्त हैं कि यह कैल्विनवाद का समर्थन करता है? या कुछ लोग 1 कुरिन्थियों 11 और 1 तीमुथियुस 2 में सुप्रसिद्ध लिंग अनुच्छेद पढ़ते हैं, और कुछ आश्वस्त हैं कि यह महिलाओं को किसी भी प्रकार के मंत्रालय में भाग लेने की अनुमति देता है, जिसमें समन्वय और वरिष्ठ पादरी के रूप में कार्य करना शामिल है, जबकि अन्य वही पाठ पढ़ते हैं, जा रहे हैं लेखक की मंशा के अनुरूप, और इसे उन भूमिकाओं को सीमित करने के रूप में देखें जो महिलाओं को मंत्रालय में निभानी चाहिए।

इसलिए क्योंकि दुभाषिए किसी पाठ के विभिन्न अर्थों और व्याख्याओं के साथ आते हैं, कुछ लोग सुझाव देंगे कि वे पाठक जो लेखक के इरादे की तलाश कर रहे हैं, बाइबिल को भगवान के वचन के रूप में मानते हैं, वे अलग-अलग व्याख्याओं के साथ आते हैं, जिन्होंने लेखक का इरादा पाया है, कुछ लोग यह निष्कर्ष निकालेंगे कि लेखक का इरादा अप्राप्य है। एक अंतिम, फिर से अन्य भी हो सकते हैं, अन्य उदाहरण भी हो सकते हैं जिन्हें हम इंगित कर सकते हैं, लेकिन नए नियम के लेखक स्वयं अक्सर पुराने नियम के ग्रंथों में नए अर्थ ढूंढते दिखते हैं। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों अध्याय 10, 1 से 5, 1 कुरिन्थियों अध्याय 10, 1 से 5 में, जहां पॉल कोरिंथियन चर्च में संबोधित कई समस्याओं में से एक को संबोधित करता है, अपने पाठकों की तुलना भगवान के लोगों की पुराने नियम की पीढ़ी से करता है जैसे वे निर्गमन से निकलकर जंगल में चले गए, और पौलुस यही कहता है, क्योंकि हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनभिज्ञ रहो, कि हमारे सब पूर्वज बादल के नीचे थे, और वे सब समुद्र के पार चले गए।

उन सब ने बादल और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया। उन सभी ने एक ही आध्यात्मिक भोजन खाया। स्मरण करो जब परमेश्वर इस्राएलियों को मन्ना खिलाता था, और जब परमेश्वर चट्टान से जल निकालता था? अब यह सुनो, और उन्होंने वही आत्मिक पेय पिया, क्योंकि उन्होंने उस आत्मिक चट्टान से पिया जो उनके साथ थी, और वह चट्टान मसीह थी।

मैं आपको चुनौती दूंगा कि आप वापस जाएं और मूल कथा को पढ़ें और यीशु मसीह का स्पष्ट संदर्भ पाएं क्योंकि इस्राएली जंगल में भटक रहे थे। तो कुछ लोग ऐसे उदाहरणों के कारण कहेंगे, या मैथ्यू 1:23, जहां मैथ्यू यशायाह, अध्याय 7 से एक पाठ उद्धृत करता है, एक कुंवारी का वादा जो गर्भ धारण करेगी और एक बेटे को जन्म देगी, मैथ्यू ने इसे यीशु में पूरा होने के रूप में उद्धृत किया है, यीशु मसीह का व्यक्तित्व। फिर भी यदि आप यशायाह के मूल संदर्भ में वापस जाते हैं, तो कम से कम पहली नज़र में, यह कोई ईसाई पाठ या आने वाले मसीहा की भविष्यवाणी नहीं लगती है।

और इसलिए कुछ लोग उस जैसे और अन्य उदाहरणों को देखेंगे और कहेंगे कि नए नियम के लेखकों को भी पुराने नियम से लेखक के इच्छित अर्थ को पुनर्प्राप्त करने में कोई दिलचस्पी नहीं है। तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कुछ लोग अक्सर कहेंगे कि लेखक का इरादा अनावश्यक या पुनर्प्राप्त करना असंभव या अमान्य है या कम से कम हम व्याख्या और अर्थ को केवल लेखक के इरादे तक सीमित नहीं कर सकते हैं। तो इन दो दृष्टिकोणों को देखते हुए, हमें लेखक के इरादे के साथ क्या कहना चाहिए या क्या करना चाहिए? हमें इसके बारे में क्या कहना चाहिए? क्या लेखक का इरादा अभी भी एक वैध और आवश्यक लक्ष्य है? मैं लेखक के इरादे के बारे में कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ जिससे मुझे लगता है कि लेखक का इरादा अभी भी एक योग्य और आवश्यक और वैध लक्ष्य है।

सबसे पहले, भले ही हम इसे नहीं करते हैं या इसे उसी तरह से आगे नहीं बढ़ाते हैं जैसे श्लेइरमाकर ने किया था या जिस तरह से अतीत में कभी-कभी इसका इलाज किया गया है या इसे आगे बढ़ाया गया है, लेकिन सबसे पहले, पहला अवलोकन जो मैं करूंगा क्या मुझे ऐसा

लगता है कि यदि बाइबल वास्तव में ईश्वर का प्रेरित शब्द है, यदि हमारे पास जो पाठ है वह एक मानवीय उत्पाद, एक दैवीय उत्पाद उत्पाद से कम नहीं है, तो इससे मुझे पता चलता है कि लेखक का इरादा अभी भी वैध है और आवश्यक लक्ष्य. यदि ईश्वर अपने वचन के पीछे खड़ा है, तो अवश्य ही इसका कोई स्थिर अर्थ होगा जिसे कोई भी समझ सकता है। अर्थात्, ईश्वर ने वहाँ एक अर्थ रखा होगा कि वह अपने लोगों से संवाद करना चाहता है और उसने हमें इसलिए बनाया होगा ताकि हम इसे समझ सकें।

और इसके अलावा, जब आप धर्मग्रंथ के पाठ को पढ़ते हैं, तो ईश्वर स्पष्ट रूप से अपने लोगों से अपेक्षा करता है कि वे उसके वचन का पालन करें और उस पर प्रतिक्रिया दें ताकि अर्थ और लेखक के इरादे के बारे में पूर्ण संदेह हो या अर्थ को पुनः प्राप्त करने के बारे में अज्ञेयवाद धर्मग्रंथ की प्रेरणा के साथ असंगत प्रतीत हो। भगवान की तलवार। जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि यह आसान है, कि कभी असहमति नहीं होगी। इसका मतलब यह नहीं है कि अर्थ को विस्तृत रूप से या पूरी तरह से पुनर्प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन निश्चित रूप से यह अभी भी एक वैध लक्ष्य के रूप में खड़ा है क्योंकि धर्मग्रंथ के रूप में भगवान के शब्द की प्रकृति को देखते हुए, जिसे भगवान अपने लोगों से पालन करने का इरादा रखते हैं, सुझाव देते हैं कि भगवान, इसका एक अर्थ होना चाहिए उसने इसमें वह रखा है जो वह चाहता है कि लोग समझें।

दूसरा, मुझे लगता है कि जब हम लेखक के इरादे को समझते हैं, तो हमें यह समझने की जरूरत है कि लक्ष्य लेखक की मनोवैज्ञानिक विचार प्रक्रिया को पुनर्प्राप्त करना नहीं है। लेखक के इरादे की हालिया व्याख्याओं और व्याख्याओं में इससे बचने के लिए सावधानी बरती गई है। लक्ष्य लेखक की विचार प्रक्रिया या मनोवैज्ञानिक स्थिति या मन के इरादे को उजागर करना नहीं है, बल्कि लेखक तक हमारी एकमात्र पहुंच उत्पाद, वह पाठ है जो लेखक ने लिखा है और जिसे उसने उत्पादित किया है।

इसलिए जब हम लेखक के इरादे के बारे में सोचते हैं, तो मुझे लगता है कि हमें थोड़ा और अधिक सूक्ष्म होने की आवश्यकता है। यह वह अर्थ है जिसे लेखक ने पाठ में कूटबद्ध किया है। पाठ ही

एकमात्र साक्ष्य है जो हमारे पास है कि एक लेखक क्या करने की कोशिश कर रहा था और एक लेखक क्या संप्रेषित करने की कोशिश कर रहा था।

फिर, धारणा यह है कि लेखक एक निश्चित स्थान पर और एक निश्चित समय पर कुछ संचार करने का प्रयास कर रहा था, और पाठ एक लेखक की ओर से एक पाठक के लिए एक ऐतिहासिक संचार अधिनियम का रिकॉर्ड है। तो हम उस कृत्य को उजागर कर सकते हैं। हम लेखक द्वारा निर्मित पाठ पर विचार करके खोज और व्याख्या और अध्ययन कर सकते हैं और उजागर कर सकते हैं कि लेखक क्या करने की कोशिश कर रहा था।

जैसा कि पाठ के व्याकरण में प्रकट होता है, जैसा कि पाठ की संरचना में प्रकट होता है, हम यह उजागर कर सकते हैं कि लेखक का अभिप्राय सबसे अधिक क्या है। दूसरे शब्दों में, अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की तरह या अन्य ऐतिहासिक घटनाओं की तरह, पाठ एक लेखक के कुछ करने के इरादे का, कुछ संप्रेषित करने के इरादे का एक लेखा-जोखा है, एक लेखक के जानबूझकर संप्रेषणीय कृत्य का एक लेखा-जोखा है। और इसलिए लक्ष्य उस कार्य को यथासंभव समझना है।

इसलिए जरूरी नहीं कि लेखक के दिमाग में उतरें, या खुद को किसी तरह अंदर डालें, लेखक के साथ सहानुभूति रखें, बल्कि यह समझें कि पाठ लेखक के कुछ संप्रेषित करने के इरादे के बारे में क्या बताता है। लेखक के इरादे के संबंध में तीसरी टिप्पणी यह है कि लक्ष्य हमारी समझ में संपूर्ण या परिपूर्ण होना नहीं है। अर्थात्, लेखक के इरादे का लक्ष्य यह सुझाव देना नहीं है कि किसी तरह हम लेखक के इच्छित अर्थ को विस्तृत रूप से या पूरी तरह से समझ सकते हैं, बल्कि यह कि हम अपनी व्याख्या में पर्याप्त और पर्याप्त रूप से ऐसा कर सकते हैं।

इसलिए हमें पर्याप्त रूप से ऐसा करने में सक्षम होने के साथ लेखक के अर्थ की विस्तृत व्याख्या के साथ भ्रमित होने के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है। सिर्फ इसलिए कि हम लेखक के अर्थ को पूरी तरह और व्यापक रूप से उजागर नहीं कर सकते इसका मतलब यह नहीं है कि

हम कुछ हद तक ऐसा नहीं कर सकते हैं। इसलिए एक बार फिर, हमें लेखक के इरादे को समझने में और अधिक सूक्ष्मता बरतने की जरूरत है।

नंबर चार, मुझे लगता है कि संदेह के व्याख्याशास्त्र को सम्मान के व्याख्याशास्त्र से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। अर्थात्, पाठ को इस संदेह के साथ देखने के बजाय कि हम लेखक के इरादे का पता लगा सकते हैं या इसे पूरी तरह से खारिज कर सकते हैं, इसे सम्मान के व्याख्याशास्त्र द्वारा प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता है। प्राचीन लेखक के प्रति सम्मान, प्राचीन पाठ के प्रति सम्मान, प्राचीन संदर्भ के प्रति सम्मान के लिए आवश्यक है कि हम इसे अपनी व्याख्या में कुछ प्राथमिकता दें।

इसलिए, मुझे लगता है, हिर्श के संबंध में जिस अर्थ-महत्वपूर्ण अंतर के बारे में हमने बात की, उसमें योग्यता है। इसका अर्थ है पाठ को बोलने देना, यह समझना कि यह पाठ एक लेखक द्वारा एक निश्चित ऐतिहासिक संदर्भ में एक निश्चित उद्देश्य के लिए तैयार किया गया था, और किसी तरह हम पर्याप्त रूप से, यदि अपर्याप्त नहीं तो, यदि पूरी तरह से और विस्तृत रूप से नहीं, तो उसे पुनर्प्राप्त कर सकते हैं। और इसके महत्व के बीच अंतर किया जा सकता है कि इसका अलग-अलग संदर्भों और अलग-अलग पाठकों और अलग-अलग स्थितियों से कैसा संबंध है।

पुनः, जिसे इंजीलवादी अक्सर आवेदन कहते हैं। इसलिए संदेह के व्याख्याशास्त्र को सम्मान के व्याख्याशास्त्र से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। पाठ के प्रति सम्मान, वह लेखक जिसने इसे तैयार किया, ऐतिहासिक परिस्थितियाँ और संदर्भ जो पाठ को लेकर आए, जिसमें पाठ का निर्माण हुआ।

पांचवां, शायद इस तर्क में कुछ दम है कि कोई भी तर्क कि लेखक का इरादा अमान्य है, तार्किक रूप से आत्म-पराजय है। फिर से, अधिकांश लोग जो इस तरह के विचारों को संप्रेषित करते हैं, वे इस तरह से बहस करते हैं जिससे उन्हें समझे जाने की उम्मीद होती है, और वे संवाद करने के तरीके से बहस करते हैं। अर्थात्, हम समझने के लिए लिखते हैं, और बाइबिल पाठ को पढ़ने

और बाइबिल पाठ की व्याख्या करने से कम से कम लेखक को बोलने और समझने का प्रयास करने की अनुमति मिलनी चाहिए कि लेखक इस पाठ के साथ क्या करने का प्रयास कर रहा था।

अंतिम, तब भी जब असहमति होती है, चाहे वह सहस्राब्दी के मुद्दे पर हो, या मंत्रालय में महिलाओं के मुद्दे पर हो, या इस मुद्दे पर हो कि क्या करिश्माई उपहार जैसे कि अन्य भाषाओं में बोलना और भविष्यवाणी और चमत्कार आज भी मान्य हैं या नहीं, यहां तक कि जो लोग बहस करते हैं, उन पर असहमत हैं, वे अभी भी पाठ में अपनी व्याख्या को आधार बनाने का प्रयास करते हैं और वे सोचते हैं कि लेखक का इरादा क्या था, पाठ को केवल सभी के लिए स्वतंत्र और कुछ भी के रूप में व्याख्या के रूप में देखने के विपरीत -जाता है। तो व्याख्या के लक्ष्य के रूप में लेखक का इरादा, एक व्याख्याशास्त्र पाठ को इस तरह समझाया गया है, मुझे लगता है कि यह समझने का एक उपयोगी तरीका है कि व्याख्या का लक्ष्य क्या है, हम लेखक के इरादे को कैसे समझते हैं, क्या एक पाठ को इस तरह रखा जा सकता है, लेखक का इरादा, तब व्याख्या का लक्ष्य पाठ के अर्थ तक पहुंचना है। पाठ का अर्थ वह है जो उस पाठ के शब्द और व्याकरणिक संरचना लेखक-संपादक के संभावित इरादे और उसके इच्छित पाठकों द्वारा उस पाठ की संभावित समझ के बारे में प्रकट करते हैं।

मैं उसे दोबारा पढ़ूंगा, पाठ का अर्थ वह है जो उस पाठ के शब्द और व्याकरणिक संरचनाएं लेखक-संपादक के संभावित इरादे और इच्छित पाठकों द्वारा उस पाठ की संभावित समझ के बारे में बताती हैं। मुझे इस परिभाषा या विवरण पर कुछ टिप्पणियाँ करने दीजिए। सबसे पहले, ध्यान दें कि यह पाठ में ही आधारित है।

ध्यान दें कि जहां तक विचार प्रक्रिया का सवाल है या लेखक के दिमाग में जो कुछ था, उसका उद्देश्य लेखक के इरादे को पुनः प्राप्त करना नहीं है। यहां लक्ष्य यह निर्धारित करना है कि पाठ लेखक के इरादे के बारे में क्या खुलासा करता है। यह पाठ का शब्दांकन है, पाठ का व्याकरणिक निर्माण है, और मैं वह भी जोड़ूंगा जो हम पाठ के आसपास की ऐतिहासिक परिस्थितियों के बारे में जान सकते हैं।

यह सब लेखक की मंशा के बारे में कुछ न कुछ खुलासा करता है। लेकिन इसके अलावा, संभाव्यता की भाषा पर ध्यान दें। यह परिभाषा संपूर्णता की भाषा से बचती है या किसी तरह पूरी तरह से या पूर्ण निश्चितता के साथ या कि किसी तरह हम लेखक के इरादे को उजागर करते हैं और हमारा काम हो जाता है, हम निश्चित हो सकते हैं कि हम उस तक पहुंच गए हैं।

लेकिन मुझे संभाव्यता की भाषा पसंद है। लक्ष्य लेखक या संपादक के संभावित इरादे को उजागर करना है। फिर, कभी-कभी किसी संपादक द्वारा पाठों को एक साथ लाया जाता है, लेकिन संभावित इरादे को समझते हुए, लेकिन वह पाठ की संरचना, व्याकरणिक संरचना, शब्दों और फिर से ऐतिहासिक परिस्थितियों को देखते हुए पाठ से ही जुड़ा होता है।

यहां तक कि जिन मूल पाठकों के लिए लेखक लिख रहा था, उन्होंने शायद इस आलोक में क्या समझा होगा कि लेखक पाठक के क्षितिज के भीतर क्या संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा था, कोई भी लेखक के संभावित इरादे पर पहुंच सकता है। फिर, इससे यह पता चलता है कि लेखक द्वारा हमें यह बताए बिना कि उसका वास्तव में क्या मतलब है, पूर्ण निश्चितता हमसे दूर हो जाती है। और जैसा कि मैंने कुछ समय पहले न्यू टेस्टामेंट के एक जाने-माने विद्वान के साथ अपनी बातचीत में जो उदाहरण दिया था, उससे पता चलता है कि कभी-कभी जीवित लेखक भी निश्चित नहीं होते हैं कि उनका क्या मतलब है या वास्तव में उनका इरादा क्या है।

ताकि यह पूर्ण निश्चितता की भाषा से बच सके और यह महसूस कर सके कि क्योंकि हमारे पास ऐसा नहीं है, क्योंकि हम पाठ से दो सहस्राब्दियों या उससे अधिक वर्षों से अलग हैं, हमारे और मूल संदर्भ के बीच कुछ दूरियों के कारण, क्योंकि लेखक है अब यहां नहीं है, हमारे पास केवल पाठ ही है और इसलिए पाठ पर विचार करके हम उच्च स्तर की संभावना पर पहुंच सकते हैं कि हमारी व्याख्या लेखक की मंशा से मेल खाती है। मैं इसे कैसे कहना चाहूंगा, मैं व्याख्या कहूंगा, कोई भी व्याख्या वैध है यदि वह इस प्रश्न का उत्तर देती है कि पाठ से क्या उचित ठहराया जा सकता है और हम मूल लेखक, उसके संदर्भ और उसके पाठकों के बारे में क्या जान सकते हैं। और फिर पाठ से ही जिसमें पाठ की संरचना, व्याकरण शामिल होगा, लेकिन इसे उसके संदर्भ

में रखकर, हम लेखक के बारे में सब कुछ जान सकते हैं, संदर्भ में ऐतिहासिक स्थिति, पाठक, व्याकरण, पाठ की संरचना, संदर्भ, उस डेटा के आधार पर क्या उचित ठहराया जा सकता है।

इसलिए यह संचार के मूल कार्य को उसके मूल संदर्भ में सम्मान देने, प्राथमिकता देने का आह्वान है। हम पाठ के साथ और कुछ भी कर सकते हैं, हम इसे कैसे भी लागू कर सकते हैं, हम इसे किसी भी तरह से उपयोग कर सकते हैं, मुझे ऐसा लगता है कि यह पूछना एक वैध और आवश्यक लक्ष्य है कि सबसे अधिक संभावना यह है कि लेखक इसके माध्यम से क्या संवाद करना चाहता था। मूलपाठ। यह भी हो सकता है, हालांकि मैं फिर से उस कथावत के लिए सोचता हूँ जिसे हमने देखा या संभावित प्रतिक्रिया जहां एक लेखक व्याख्या के साथ सामना होने पर कह सकता है, हालांकि फिर से हमारे पास परामर्श करने के लिए बाइबिल के लेखक नहीं हैं, लेकिन निश्चित रूप से मामला हो सकता है बाइबिल के लेखकों के साथ भी ऐसा ही है, लेकिन ऐसे उदाहरण जहां कोई लेखक कह सकता है कि मेरा ऐसा इरादा नहीं था, लेकिन अब जब मैं इसे देखता हूँ, तो यह पाठ का अर्थ बनाता है, और मैं इसे अपने पढ़ने की वैध व्याख्या के रूप में स्वीकार करूंगा।

लेकिन फिर भी पढ़ने को पाठ, व्याकरण, शब्दांकन, पाठ की संरचना, हम लेखक के बारे में क्या जान सकते हैं, पाठकों के बारे में क्या जान सकते हैं और जिन ऐतिहासिक परिस्थितियों में यह पढ़ा जाता है, के अनुरूप होना चाहिए। उत्पादन किया गया था। फिर मुझे लेखक के इरादे के बारे में कुछ निष्कर्ष निकालने दीजिए क्योंकि यह व्याख्याशास्त्र से संबंधित है या यह बाइबिल की व्याख्या से संबंधित है। तो सबसे पहले, जहां तक अतिरिक्त चिंतन की बात है, तो लेखक की मंशा का मतलब यह है कि जब व्याख्या की बात आती है तो कुछ भी नहीं किया जाता है, बल्कि जहां असहमति होती है, वहां भी व्यक्ति लेखक की संभावित मंशा को यथासंभव उजागर करने की कोशिश करता है।

उदाहरण के लिए, ल्यूक अध्याय 16 में यीशु के अन्यायी भण्डारी के दृष्टांत की व्याख्या करना, जैसे कि हाथी या जिराफ़ या ऐसा कुछ, स्पष्ट रूप से सीमा से बाहर है, पाठ की पृष्ठभूमि को देखते हुए, लेखक द्वारा जो इरादा किया जा सकता था, उसकी सीमाएँ, और यह एक बहुत ही चरम

और मूर्खतापूर्ण उदाहरण है, लेकिन केवल यह दिखाने के लिए कि सीमाएं हैं, और यहां तक कि कुछ लोग जो कहेंगे कि लेखक का इरादा आवश्यक या वैध नहीं है, वे अभी भी सीमाएं ढूंढना चाहेंगे, कि ल्यूक का दृष्टांत हाथियों और जिराफ या कुछ और के बारे में नहीं है ऐसा ही है, लेकिन पाठ में जो मिलता है उसके आधार पर इसे अधिक सुसंगत रूप से समझा जाना चाहिए। नंबर दो, यह समझना महत्वपूर्ण है कि लेखक का इरादा खाली पाठ के रोमांटिक आदर्श या शुद्ध प्रेरण के प्रबुद्ध आदर्श और केवल तर्कसंगत आगमनात्मक विधि के आधार पर अर्थ तक पहुंचने की क्षमता पर वापस जाना नहीं है। यह लेखक के इरादे का लक्ष्य नहीं है, बल्कि कांट और अन्य लोगों से शुरू करते हुए यह महसूस करना भी है कि हम पाठों को पूर्वधारणाओं और पूर्वसूचनाओं के साथ देखते हैं।

हममें से कोई भी खाली दिमाग के साथ बाइबिल के पाठ के पास नहीं आता है, हममें से कोई भी खाली स्लेट के साथ नहीं आता है जो बस उस पर अंकित होने की प्रतीक्षा कर रहा है, हम में से कोई भी सूखे स्पंज नहीं हैं जो केवल डेटा को निष्पक्ष रूप से सोखने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि हमारी व्याख्या एक-दूसरे से मेल खाए। पाठ के अर्थ के साथ एक-एक और सही तरीके से। मुझे लगता है कि अधिकांश को यह एहसास होगा कि वह लक्ष्य संभवतः अप्राप्य है और संभवतः नाजायज है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि हम सभी के लिए मुफ्त व्याख्यात्मक बनकर रह गए हैं या कुछ भी हो जाएगा।

लेकिन इसके बजाय, हमारी पूर्वधारणाएँ, हमारी धार्मिक मान्यताएँ, हमारा विश्वास, हमारी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सभी पाठ के अधीन हो सकती हैं और पाठ द्वारा चुनौती दी जा सकती है, जिससे पाठ के अर्थ को पुनः प्राप्त करना संभवतः संपूर्ण या पूर्ण रूप से असंभव हो जाता है, लेकिन हम फिर भी कर सकते हैं ऐसा करें, हम अभी भी लेखक के इरादे को पर्याप्त और पर्याप्त रूप से उजागर कर सकते हैं। नंबर तीन, वह व्यक्ति जो कहता है, मैं बस बैठ जाता हूँ और पाठ को वस्तुनिष्ठ रूप से पढ़ता हूँ, वह शायद पाठ को समझने के लिए सबसे खराब स्थिति में है और शायद पाठ को विकृत करने के खतरे में है, क्योंकि ऐसा कुछ कहने से, वे इस बात से अनजान हो जाते हैं कि कैसे उनकी पूर्व मान्यताएँ और अनुभव और पूर्वसूचनाएँ पाठ को प्रभावित कर सकती हैं। वह व्यक्ति जो शुरुआत करता है और अपनी पूर्वकल्पनाएँ और अपना सारा सामान पाठ में

लाता है, संभवतः उनसे निपटने के लिए बेहतर स्थिति में है, उस व्यक्ति के विपरीत जो सोचता है कि किसी तरह वे पूरी निष्पक्षता के साथ पाठ में आ सकते हैं, इसलिए इस बात से अनभिज्ञ कि उनकी पूर्वधारणाएँ और मान्यताएँ पाठ को पढ़ने और उसकी व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित कर रही हैं।

और फिर चौथा, व्याख्या, विशेष रूप से लेखक के इरादे के प्रकाश में, व्याख्याकार को केवल पाठ के एक निष्क्रिय पर्यवेक्षक के रूप में कल्पना नहीं की जानी चाहिए, बल्कि इसके बजाय, पाठक, व्याख्याकार अर्थ की खोज में सक्रिय और रचनात्मक है। दुभाषिया पाठ में व्याख्या के तरीकों को कुशलतापूर्वक लागू करने में सक्रिय है। पाठक को पाठ की व्याख्या करनी होती है, उसे पढ़ना होता है और उसका अर्थ समझना होता है।

हम सिर्फ स्पंज नहीं हैं जो डेटा सोखने का इंतजार कर रहे हैं, बल्कि हमें पाठ को पढ़ना चाहिए, हमें व्याख्या के तरीकों को रचनात्मक रूप से लागू करना चाहिए और लेखक के इरादे की संभावित समझ तक पहुंचने के लिए पाठ के बारे में सोचना चाहिए। हम पाठ के साथ संवाद में प्रवेश करते हैं ताकि वह हमें चुनौती दे सके, हमें बदल सके और उसका अर्थ हमारे सामने प्रकट कर सके। तो यह कैसा दिख सकता है? बस संक्षेप के माध्यम से, लेखक के इरादे पर विचार करने का अर्थ है पाठ को उसके प्राचीन संदर्भ में जांचना।

हमने ऐतिहासिक आलोचना पद्धति के संबंध में इस बारे में बात की। इसका मतलब है लेखक और उसकी परिस्थितियों और पृष्ठभूमि के बारे में हम जो कुछ भी सीख सकते हैं उसे सीखना। इसका अर्थ यह सीखना है कि हम पाठकों और उनकी परिस्थितियों और पृष्ठभूमि के बारे में क्या कर सकते हैं।

इसका अर्थ है उनके पर्यावरण, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक वातावरण के बारे में सीखना जहां से पाठ का विकास हुआ। इसका अर्थ है शब्दों को इस दृष्टि से देखना कि पाठ लिखते समय उनका क्या अर्थ रहा होगा। इसका अर्थ है पाठ के व्याकरण को देखना।

इसका मतलब यह है कि जिस तरह से पाठ की संरचना की गई है और किसी व्याख्या के वैध होने के लिए यह सब देखना है, उसे इन मानदंडों के अनुरूप होना चाहिए। किसी व्याख्या के वैध होने के लिए, उसे यह समझना चाहिए कि लेखक के बारे में क्या ज्ञात है। इससे यह समझ में आना चाहिए कि पाठकों के बारे में क्या ज्ञात है।

इसमें उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और परिस्थितियों का बोध होना चाहिए जिनमें से पाठ का निर्माण किया गया था। इसमें पाठ के व्याकरण, शब्दों, पाठ की संरचना, इसे एक साथ रखने के तरीके का बोध होना चाहिए। कोई भी व्याख्या जो प्रशंसनीय हो, उसे इन मानदंडों पर खरा उतरना चाहिए।

तो पाठ से ही क्या उचित ठहराया जा सकता है और लेखक, पाठकों और उनकी परिस्थितियों के बारे में क्या जाना जा सकता है, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे हमारी व्याख्या को मान्य करने के लिए पूछना आवश्यक है। तो इनमें से कुछ योग्यताओं को देखते हुए और इस चर्चा को देखते हुए, मैं इस धारणा के साथ आगे बढ़ूंगा कि शुरुआत करना और लेखक के इच्छित अर्थ की तलाश करना वैध है। फिर, ऐसा नहीं है कि हम लेखक के दिमाग को पढ़ रहे हैं या लेखक की विचार प्रक्रिया को उजागर करने का प्रयास कर रहे हैं।

ऐसा नहीं है कि हमें एहसास है कि ऐतिहासिक दूरियों के कारण कठिनाइयाँ हैं और जैसा कि कोई चाहता है उतनी स्पष्टता से संवाद न कर पाने की संभावनाएँ या पाठकों की गलतफ़हमी की संभावना के कारण। यह भी स्वीकार करते हुए कि हमारे पास परामर्श के लिए मूल लेखक नहीं है। लेकिन इतना सब कुछ होने पर भी और यह एहसास होने पर कि हम लेखक के इरादे को पूरी तरह से या समग्र रूप से पुनर्प्राप्त नहीं कर सकते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि हम पर्याप्त और पर्याप्त रूप से ऐसा नहीं कर सकते हैं।

उन योग्यताओं को देखते हुए, लेखक का इरादा वास्तव में एक योग्य है और मुझे लगता है कि हमारी व्याख्या में यह आवश्यक लक्ष्य है। अब मैं जो करना चाहता हूँ वह व्याख्या और हेर्मेनेयुटिक्स के तरीकों के माध्यम से हमारी यात्रा में एक बड़ी छलांग लगाने के लिए आगे बढ़ना

है। हम पिछले कुछ सत्रों में ऐतिहासिक उन्मुख दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, ऐतिहासिक आलोचना पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और ऐतिहासिक आलोचना के भीतर कुछ अन्य आलोचनाओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जिन्होंने स्रोत, रूप और संशोधन आलोचना विकसित की है।

लेखक के इरादे को देखते हुए, उन्हें आमतौर पर पाठ के ऐतिहासिक उत्पादन को देखते हुए, अर्थ का पता लगाने या पाठ के पीछे व्याख्या की गतिविधि का पता लगाने के प्रयासों के रूप में देखा जाता है। अब मैं अपना ध्यान पाठ को अर्थ के केंद्र के रूप में देखने या पाठ के भीतर देखने पर केंद्रित करना चाहता हूँ। यह व्याख्या के लिए पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण है।

इसलिए हमने ऐतिहासिक रूप से उन्मुख दृष्टिकोण या लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण पर ध्यान दिया। अब हम व्याख्या के लिए पाठ-केंद्रित दृष्टिकोणों को देखेंगे और ऐसा करते समय हम विभिन्न तरीकों को देखेंगे। उनमें से एक या दो ने लेखक और इतिहास के प्रश्नों से अपना नाता पूरी तरह नहीं तोड़ा है, लेकिन वे अभी भी मुख्य रूप से तैयार उत्पाद के रूप में पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

मैं उन्हें भी शामिल करूंगा, मैं कई दृष्टिकोणों की जांच करना चाहता हूँ जो विशेष रूप से पाठ को व्याख्या की वस्तु और अर्थ के केंद्र के रूप में देखने में रुचि रखते हैं। अब लेखक-उन्मुख दृष्टिकोण या लेखक के इरादे की कुछ कमियों के कारण, कुछ जिनका हमने लेखक के इरादे की चर्चा में कुछ समय पहले उल्लेख किया था, व्याख्या के लिए लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण की कुछ कमियों या आपत्तियों के कारण, फिर से ऐतिहासिक रूप से और तार्किक रूप से आप देख सकते हैं कि हेर्मेनेयुटिक्स कैसे आगे बढ़ गया है, हालांकि हमेशा विशेष रूप से नहीं, लेकिन आम तौर पर ऐतिहासिक और लेखक-उन्मुख दृष्टिकोण से पाठ-उन्मुख दृष्टिकोण की ओर बढ़ गया है और फिर अगला चरण पाठक-उन्मुख दृष्टिकोण होगा। ऐतिहासिक और तार्किक रूप से व्याख्याशास्त्र अक्सर इसी तरह आगे बढ़ा है, साहित्यिक अध्ययन और बाइबिल अध्ययन के बाहर के साहित्यिक विषयों दोनों में, बल्कि बाइबिल अध्ययन में भी।

और एक और बात के रूप में, एक चीज़ जो आप देखेंगे वह यह है कि बाइबिल अध्ययन साहित्यिक अध्ययन से पीछे रह जाता है, इसलिए साहित्यिक अध्ययन या यहां तक कि पाठक दृष्टिकोण विकसित करने में अक्सर जो किया जाता है, बाइबिल अध्ययन आमतौर पर जल्दी या बाद में पकड़ लेता है और लागू करना शुरू कर देता है उनमें से कुछ दृष्टिकोण. इसलिए मैं व्याख्याशास्त्र या बाइबिल व्याख्या के लिए कुछ पाठ-केंद्रित दृष्टिकोणों को देखना चाहता हूं, यानी ऐसे दृष्टिकोण जो पाठ में ही केंद्रित अर्थ ढूंढते हैं, और आमतौर पर फिर से लेखक-केंद्रित दृष्टिकोणों की कुछ कमियों पर आधारित होते हैं, अब ध्यान इस ओर गया है पाठ ही. और यह फिर से विशेष रूप से साहित्यिक दृष्टिकोण या साहित्यिक आलोचना में पाया जाता है।

यदि आपने कभी किसी विश्वविद्यालय में साहित्यिक आलोचना का पाठ्यक्रम लिया है, तो उसी प्रकार के दृष्टिकोण अब बाइबिल अध्ययन पर लागू किए गए हैं। साहित्यिक दृष्टिकोण या पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण से संबंधित बस कुछ मुट्ठी भर टिप्पणियाँ, और फिर मेरा उद्देश्य साहित्यिक दृष्टिकोण विकसित करने और वास्तव में यह परिभाषित करने में बहुत समय खर्च करना नहीं है, बल्कि आपको साहित्यिक दृष्टिकोण की कुछ विशेषताओं से परिचित कराना है। पुराने नए नियम को, बाइबिल साहित्य को। सबसे पहले, साहित्यिक दृष्टिकोण, विशेष रूप से पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण विकसित होने पर, साहित्यिक दृष्टिकोण अक्सर व्याख्या के केंद्र के रूप में लेखक को अस्वीकार कर देते हैं।

यह दूसरे अवलोकन से संबंधित है, जिसमें केवल पाठ ही अर्थ का एकमात्र मार्गदर्शक और समझने के लिए एकमात्र मार्गदर्शक है। इसे इसके लेखक से अलग कर दिया गया है और अब इस पाठ का अपना एक जीवन है। इसलिए कुछ व्याख्याकार केवल पाठ की संरचना में रुचि रखते हैं, भले ही इसे बनाने वाले लेखक या इतिहास जिसने इसे तैयार किया हो।

वे पाठ को वैसे ही मानते हैं जैसे वह खड़ा है। इसलिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण लेखक के रूप में पाठ के ऐतिहासिक उत्पादन और पाठ का निर्माण करने वाली ऐतिहासिक परिस्थितियों पर अधिक ध्यान देते हैं, जहां साहित्यिक अध्ययन अक्सर पाठ में अधिकार को समझने के मार्गदर्शक के रूप में देखते हैं। इसलिए केवल पाठ ही अर्थ का एकमात्र मार्गदर्शक है।

इसे लेखक से काट दिया गया है. यह एक मुक्त-अस्थायी इकाई है, एक स्वायत्त पाठ है। साहित्यिक और पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण की तीसरी विशेषता यह है कि वे पाठ की औपचारिक विशेषताओं और संरचनाओं पर ध्यान देते हैं।

वे अक्सर पाठ के अंतिम रूप पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे अक्सर पाठ से पहले के किसी भी स्रोत या रूप में रुचि नहीं रखते हैं, लेकिन फिर, आम तौर पर वे अंतिम उत्पाद पर, पाठ के अंतिम रूप पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उन्हें रूपों को अलग करने या पाठ के पीछे के स्रोतों को उजागर करने में कोई दिलचस्पी नहीं है।

चौथी विशेषता, विशेष रूप से बाइबिल अध्ययन से संबंधित, वे बाइबिल को साहित्य के रूप में मानते हैं। यानी, वे पूछ रहे हैं, मेरे कहने का मतलब यह है कि वे वही प्रश्न पूछ रहे हैं जो वे किसी अन्य साहित्यिक पाठ से पूछेंगे। उदाहरण के लिए, पाठ की साहित्यिक आलोचना पर पाठ्यक्रमों में अक्सर इसी प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं, जिन्हें कोई विश्वविद्यालय सेटिंग में ले सकता है।

पांचवीं और अंतिम विशेषता यह है कि ऐतिहासिक प्रश्नों को अक्सर कोष्ठक में रखा जाता है। फिर, पाठ को एक स्व-निहित इकाई के रूप में देखा जाता है, और एकमात्र दुनिया जो महत्वपूर्ण है वह दुनिया है जो पाठ में निहित है। पाठ में जो दुनिया पाई जाती है, उसका पाठ के बाहर की दुनिया से उतना सरोकार नहीं है।

अर्थात्, साहित्यिक पाठों को अक्सर स्व-संदर्भित के रूप में देखा जाता है, पाठ द्वारा ही बनाई गई दुनिया, न कि वह दुनिया जिसे वह पाठ के बाहर संदर्भित करता है। तो फिर, आप अक्सर साहित्यिक अध्ययनों को इस बात में उदासीन देखते हैं कि किसी कथा में एक निश्चित चरित्र ऐतिहासिक था या नहीं, या क्या एक निश्चित घटना वास्तव में घटित हुई थी। उन्हें इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है.

वे केवल कथा संरचना में रुचि रखते हैं, पाठ के भीतर की दुनिया की संरचना में, न कि पाठ के बाहर की किसी दुनिया में जिसका उल्लेख पाठ में हो सकता है। अक्सर, ऐतिहासिक प्रश्नों को कोष्ठक में रखा जाता है, और पाठ को एक स्व-संदर्भित, स्व-निहित इकाई के रूप में देखा जाता है। लेकिन इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण मौजूद हैं।

मैं आपको बस कुछ मुट्टी भर दृष्टिकोणों का एक उदाहरण देना चाहता हूँ जिन्हें मैं बहुत व्यापक रूप से साहित्यिक दृष्टिकोण के तहत, या अधिक व्यापक रूप से पाठ-केंद्रित दृष्टिकोण के तहत रखने जा रहा हूँ। आमतौर पर, पुराने नए नियम के प्रति साहित्यिक दृष्टिकोण को औपचारिकता के रूप में जाना जाता है, या नई आलोचना के साथ उभरते देखा जाता है जो वास्तव में 1920 के दशक में उभरी थी। फिर, जैसा कि मैंने कहा है, अक्सर बाइबिल अध्ययन अन्य विषयों में जो किया जाता है उसे पकड़ने में भूमिका निभाता है।

लेकिन अधिकांश लोग जब साहित्यिक आलोचना के बारे में सोचते हैं, चाहे वह किसी अन्य पाठ की हो या बाइबिल पाठ की, अक्सर औपचारिकता, या नई आलोचना के बारे में ही सोचते हैं। और फिर, औपचारिकता की विशेषता यह थी कि पाठ अर्थ उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त है। पुनः, पाठ आत्मनिर्भर है।

यह स्वायत्त है। यह लेखक से अलग है, इसलिए यह लेखक के बारे में प्रश्न नहीं पूछता है और लेखक ने क्यों लिखा और इसे बनाने वाली ऐतिहासिक परिस्थितियाँ क्या हैं। अर्थ उत्पन्न करने के लिए पाठ स्वयं ही पर्याप्त है।

दूसरा, ऐतिहासिक मामलों को आमतौर पर कोष्ठक में रखा जाता है। फिर, हमने पहले इसका उल्लेख किया था, क्योंकि फिर से, पाठ की दुनिया स्व-संदर्भित है। यह पाठ के भीतर समाहित है।

उन्हें पाठ के बाहर की दुनिया में कोई दिलचस्पी नहीं है जिसका पाठ में उल्लेख हो सकता है। रूपवाद सौन्दर्य अभिरुचि और साहित्यिक कलात्मकता पर भी ध्यान देता है। दूसरे शब्दों में,

बाइबिल अध्ययन के लिए, इसका मतलब होगा कि पाठ को उसी तरह से व्यवहार किया जाए जैसे किसी अन्य पाठ को माना जाएगा।

लिए, कोई बाइबिल कथा, बाइबिल पाठ, जैसे कि अय्यूब का पाठ मान सकता है। कोई व्यक्ति अय्यूब की पुस्तक पढ़ सकता है और लेखकत्व के मुद्दों के बारे में चिंतित नहीं हो सकता है, जहां तक कि पुस्तक किसने लिखी है, या तारीख के मुद्दे या लेखन की जगह के बारे में चिंतित नहीं है। किसी को इस सवाल में कोई दिलचस्पी नहीं होगी कि क्या अय्यूब एक वास्तविक व्यक्ति था या नहीं, एक ऐतिहासिक व्यक्ति था, या जो घटनाएँ पुस्तक में दर्ज हैं वे वास्तव में घटित घटनाएँ थीं, या जो मित्र उसे सलाह देते हैं वे वास्तविक हैं या नहीं।

किसी को इस बात की चिंता नहीं होगी कि वे वास्तविक वक्ता थे या नहीं, बल्कि किसी को केवल साहित्यिक कलात्मकता और पाठ की साहित्यिक संरचना, और इसका पाठक पर पड़ने वाले प्रभाव, और पाठ के भीतर पात्रों को कैसे चित्रित किया गया है, के बारे में चिंता होगी। स्वयं, और वे एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं। कहानी का कथानक, मुख्य दृष्टिकोण, जैसे प्रश्न। उसी प्रकार के प्रश्न जो कोई साहित्य के किसी भी कार्य से पूछता है।

और स्पष्ट कारणों से, यह दृष्टिकोण कथा और काव्य पाठ में भी प्रभावी हुआ। पुराने नियम में, विशेष रूप से पुराने काव्य पाठ, कथा पाठ। नए नियम में, सुसमाचार और दृष्टांत जैसे कथात्मक रूप तार्किक स्थान थे जहां यह पकड़ में आता था।

शायद एक उपसमुच्चय या एक प्रकार की औपचारिकता या साहित्यिक आलोचना को कथात्मक आलोचना के रूप में जाना जाता है। हम पुराने नए नियम के संबंध में इसके बारे में भी थोड़ी बात करेंगे। लेकिन फिर से, बहुत संक्षेप में केवल कुछ उदाहरण देने के लिए, और फिर से मैं शायद उन कारणों से नए नियम पर थोड़ा अधिक ध्यान दूंगा जो मैंने पहले बताया है।

लेकिन पुराने नियम के भीतर, उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 1 और 2, हमने नीचे कहा, और मैं कुछ उदाहरणों का उपयोग करूंगा, और शायद उनकी तुलना करने के लिए, साहित्यिक दृष्टिकोण के

तहत उनका उपचार तुलना या इसके विपरीत हो सकता है उदाहरण के लिए, अधिक ऐतिहासिक रूप से उन्मुख दृष्टिकोण के तहत उनके साथ कैसा व्यवहार किया गया होगा। इसलिए पुराने नियम के साथ, हम उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 के बारे में संक्षेप में बात करते हैं, और सृष्टि कथा के दो खातों की तुलना करते हैं। शैली, शब्दावली और परिप्रेक्ष्य में अंतर के कारण, एक पुराना ऐतिहासिक रूप से उन्मुख दृष्टिकोण यह सवाल पूछेगा कि स्रोत क्या हैं, उन दो सृजन कहानियों के पीछे कौन से स्रोत हैं, और इससे भी आगे बढ़कर तारीख और सेटिंग के बारे में भी पूछा जा सकता है। वो दो कहानियाँ।

लेकिन प्रयास उन स्रोतों को फिर से बनाने का रहा होगा जो उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि के दो खातों के पीछे हैं, और उन्हें सही स्रोतों, जे स्रोत या ई स्रोत या जो भी, जो सृष्टि की कहानी के पीछे है, को सौंपा गया है। उत्पत्ति 1 और 2। इसके बजाय, इस पाठ के लिए एक कथात्मक दृष्टिकोण या एक साहित्यिक दृष्टिकोण पाठ की साहित्यिक एकता को इंगित करेगा और कहा जाएगा, और दिलचस्प बात यह है कि कभी-कभी, वही डेटा जो स्रोत आलोचक दस्तावेज़ को विच्छेदित करने के लिए उपयोग करेंगे। साहित्यिक आलोचकों द्वारा इसकी एकता और पाठ की आंतरिक कार्यप्रणाली को प्रदर्शित करने के लिए। इसलिए एक साहित्यिक दृष्टिकोण पाठ की एकता, साहित्यिक एकता पर जोर देगा। यह जल और सृष्टिकर्ता, भूमि और बीज, श्राप और आशीर्वाद और उत्पत्ति 1 और 2 के साथ-साथ पुस्तक के बाकी हिस्सों में उनकी भूमिका के विषयों को पकड़ सकता है।

वास्तविक रचना के संबंध में यह पाठ क्या कह सकता है, इसके बारे में प्रश्न पूछने के बजाय, क्या भगवान ने दुनिया को सात शाब्दिक दिनों में बनाया था या यह एक दिन की आयु थी या अंतराल सिद्धांत था? यह सृजन की वास्तविक प्रक्रिया के बारे में सत्तामीमांसकीय रूप से क्या कहता है? ऐतिहासिक रूप से, फिर से, कुछ लोग इन विषयों की जांच कर सकते हैं और वे कैसे कार्य करते हैं और फिर से पाठ की साहित्यिक कलात्मकता की जांच कर सकते हैं। लेखक द्वारा अन्य स्रोत डालने या क्या यह ब्रह्मांड की वास्तविक रचना से मेल खाता है या यह कैसे मेल खाता है, इसके बारे में प्रश्न पूछने के बजाय। और इसलिए केवल पाठ को एक साहित्यिक एकता के रूप में देखना और पाठ की संरचना और आंतरिक कार्यप्रणाली को देखना।

या एक अन्य उदाहरण, एक छोटे उदाहरण का उपयोग करने के लिए, रूथ की पुस्तक। फिर से, कोई रूथ की पुस्तक को केवल एक कहानी के रूप में पढ़कर जांच सकता है, पात्रों की ऐतिहासिकता के बारे में दोबारा सवाल नहीं पूछ सकता है और किसी भी स्रोत के बारे में सवाल नहीं पूछ सकता है जिसका उपयोग किया जा सकता है या ऐतिहासिक रूप से यह सवाल पूछ सकता है कि यह पाठ कैसे काम करता है। लेकिन इसके बजाय वे कथानक, कहानी के कथानक, पात्रों के विकास के बारे में प्रश्न पूछ सकते हैं और पाठक पर इसके सौंदर्य प्रभाव के लिए कहानी पढ़ सकते हैं।

फिर, साहित्यिक आलोचना के संदर्भ में ये अक्सर पारंपरिक प्रश्न पूछे जाते हैं। तो फिर, मैं पुराने नियम में विशेष रूप से कथात्मक ग्रंथों के उदाहरणों को कई गुना बढ़ा सकता हूँ, लेकिन अन्य ग्रंथों की जांच साहित्यिक आलोचना या औपचारिकता की नजर से की जाती है। फिर से, पाठ को केवल साहित्य के एक टुकड़े के रूप में देखना, इसकी संरचना, इसके विकास के बारे में प्रश्न पूछना, इसे स्वयं-निहित के रूप में देखना, पाठ में दुनिया, पाठ के बाहर की दुनिया नहीं, कोष्ठक में प्रश्न पूछना इतिहास, आदि

बस इसे साहित्य के एक टुकड़े के रूप में देख रहा हूँ। न्यू टेस्टामेंट में, साहित्यिक आलोचना भी मुख्य रूप से गॉस्पेल में पकड़ी गई, हालांकि साहित्यिक आलोचना कथा साहित्य और गॉस्पेल के बाहर तक फैली हुई है। लेकिन बाद में जब हम कथात्मक आलोचना के बारे में बात करते हैं तो मैं गॉस्पेल पर थोड़ा गौर करना चाहता हूँ।

लेकिन मैं न्यू टेस्टामेंट में साहित्यिक आलोचना के एक उदाहरण का उल्लेख करना चाहता हूँ, जिसका उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं। वह यीशु के दृष्टांत हैं। हमने सुझाव दिया कि यीशु के दृष्टान्तों को सीमित रूपक के रूप में देखा जा सकता है, यानी ऐसी कहानियाँ जिनमें कहानी के मुख्य पात्रों के अनुसार एक, दो या तीन मुख्य अर्थ हों।

ऐसा प्रतीत होता है कि दृष्टान्त साहित्यिक आलोचना के लिए अध्ययन का एक उपयोगी क्षेत्र रहा है क्योंकि दृष्टान्त काल्पनिक कहानियाँ प्रतीत होते हैं। अर्थात्, यद्यपि वे यथार्थवादी हैं, यीशु कभी यह दावा नहीं करते कि वह ऐसी कहानियाँ बता रहे हैं जो वास्तव में ऐतिहासिक रूप से घटित हुई हैं, बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपनी शिक्षाओं और अपने मंत्रालय तथा परमेश्वर के राज्य के बारे में सच्चाई बताने के लिए सामान्य कहानियों का सहारा ले रहे हैं। हालाँकि, साहित्यिक आलोचना, दृष्टान्तों की संरचना और सौंदर्यशास्त्र जैसी चीज़ों पर सावधानीपूर्वक ध्यान देती है।

उदाहरण के लिए, हम पहले ही देख चुके हैं कि दृष्टान्तों की जांच इस आधार पर की जा सकती है कि क्या वे मोनैडिक हैं, यानी, एक मुख्य चरित्र के साथ, डायडिक, दो मुख्य पात्रों के साथ, या त्रियादिक, तीन मुख्य पात्रों के साथ। और यहां तक कि कभी-कभी, जब आपके पास तीन मुख्य पात्र होते हैं, तब भी साहित्यिक आलोचक एक और सवाल पूछते हैं कि क्या सभी पात्र समान भूमिका निभाते हैं, क्या आपके पास समान अधिकार के स्तर पर दो अन्य पात्रों के साथ मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति है, या क्या संरचना अधिक ऊर्ध्वाधर है, जहां आपके पास एक प्राधिकारी व्यक्ति और उस व्यक्ति के अधीन अन्य व्यक्ति होते हैं, जैसे नौकरों के साथ एक स्वामी। इसलिए वे दृष्टान्त की संरचना, पात्र कैसे कार्य करते हैं और उन्हें एक साथ कैसे रखा जाता है, के बारे में प्रश्न पूछते हैं।

कुछ लोग दृष्टान्तों की सौंदर्यात्मक प्रकृति के बारे में प्रश्न पूछते हैं। यह दिलचस्प है कि कई दृष्टान्तों में अवास्तविक तत्व शामिल हैं। हम पहले ही देख चुके हैं कि उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त में, यह अवास्तविक है कि पहली शताब्दी के दृष्टान्त में पिता के स्वभाव का एक पिता अपने बेटे का स्वागत करने के लिए दौड़ा होगा।

इसलिए कभी-कभी देखा जाता है कि दृष्टान्तों में एक पंचलाइन होती है और जैसे-जैसे दृष्टान्त पढ़ा जाता है, उनमें एक सौंदर्यात्मक प्रभाव और आकर्षण होता है। कभी-कभी दृष्टान्तों पर यह भी लेबल लगा दिया जाता है कि वे दुखद हैं या हास्यप्रद। यानी, क्या दृष्टान्त का कथानक ऊपर उठता है और फिर गिर जाता है, या वह दुखद होगा, जहां आकृति का दुखद अंत होता है, या क्या दृष्टान्त

नीचे की ओर गिरता है और उसमें एक दुखद तत्व दिखाई देता है, लेकिन फिर वह ऊपर उठता है कहानी के नायक के लिए एक सकारात्मक अंत।

इसलिए दृष्टांतों को अक्सर वर्गीकृत किया जाता है कि वे अधिक हास्यप्रद हैं या दुखद। इसलिए साहित्यिक आलोचना, कम से कम दृष्टान्तों के साथ, अक्सर हमें यह देखने में मदद कर सकती है कि मुख्य बिंदु कहाँ हैं, यह देखने के लिए कि कहानी कैसे संरचित है और यह कैसे काम करती है, और यहां तक कि पाठकों पर भी प्रभाव पैदा करती है। अगले सत्र में मैं जो करना चाहता हूँ वह शायद साहित्यिक आलोचना के नए नियम में एक और उदाहरण देखना है, लेकिन फिर साहित्यिक आलोचना की एक और विशिष्ट विशेषता पर भी आगे बढ़ना है जिसे कथात्मक आलोचना के रूप में जाना जाता है, और जांच करें कि वह क्या है और क्या है इसका उपयोग कैसे किया जाता है, और यह पुराने नियम और नए नियम में कथा साहित्य की व्याख्या करने में कैसे मदद कर सकता है।